राजस्थान लोक सेवा आयोग
प्रारम्भिक परीक्षा
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

(राजस्थान का इतिहास, कला,संस्कृति, परम्परा एवं विरासत)

राजस्थान की स्थापत्य कला

पाठ्यक्रम

स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएँ- किलें एवं स्मारक

निर्माण IAS

राजस्थान में कला

अपने मनोभावों को सुन्दरतम ढंग से प्रकट करने की विधि कों 'कला' की संज्ञा दी जाती है। कला कलाकार के मनोभावों की अभिव्यंजना है, साधना है, गहन अनुभूमि है और साकार रूप है। कला मानव के साथ पैदा हुई और प्रकृति के कण-कण से इसका पालन हुआ। ज्यों-ज्यों सभ्यता का विकास होता गया, कला उतनी ही परिष्कृत, सुन्दर एवं सौष्ठव रूप धारण करने लगी।

राजस्थान की सांस्कृतिक यात्रा अत्यन्त प्राचीन, समृद्ध और गौरवापूर्ण है। राजस्थान में कला के अवशेष प्रागैतिहासिक काल से उपलब्ध है। सिन्धु सरस्वती सभ्यता के पुरावशेष भी इस तथ्य की पुष्टि करते है। उत्खनन मे प्राचीन प्रस्तर, धातु युगीन संस्कृति के महत्वपूर्ण अवशेष मिले है। परवर्तीकाल में राजस्थान के शासकों ने वास्तुविदों, तक्षकों, चित्रकारों को संरक्षण प्रदान किया तथा कला परम्परा को अक्षुण बनाये रखने का प्रयत्न किया। कला जगत की विधाओं मुख्यतः स्थापत्य-कला मूर्तिकला, चित्रकला एवं संगीतकला में विभक्त किया जा सकता है।

स्थापत्य कला

राजस्थानी स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषता शिल्प- सौष्ठव, अलंकृत पद्धति एवं विषयों की विविधता है। यह हिन्दू स्थापत्य कला के रूप में जानी जाती है। राजपूतों की वीरता के कारण राजस्थान के स्थापत्य मे शौर्य की भावना स्पष्टतः दिखाई देती है। मध्य काल मे जब तुर्कों के निरंतर आक्रमण होने लगे तो राजस्थानी स्थापत्य में शौर्य के साथ-साथ सुरक्षा की भावना का भी समावेश किया गया और विशाल एवं सुदृढ़ दुर्ग बनवाने आरम्भ कर दिये गए। सुरक्षा की दृष्टि से राजपूत शासकों ने अपने निवास भी दुर्ग के भीतर बनवाये तथा पानी का व्यवस्था के लिये जलाशय खुदवाये। राजपूत शासकों की धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा ने दुर्ग के भीतर मंदिरों का निर्माण भी करवाया। 17वीं सदी में मुगलों के सम्पर्क से राजपूत एवं मुस्लिम कला का पारस्परिक मिलन हुआ, जिससे हिन्दू एवं मुस्लिम स्थापत्य शैलियों में समन्वय हुआ। दोनों शैलियों के समन्वय से राजस्थानी स्थापत्य का रूप निखर आया।

प्रमुख विशेषाएँ-

1. **प्राचीन स्थापत्य-** राजस्थान की स्थापत्य कला बहुत प्राचीन है। यहाँ पर काली बंगा में सिन्धु घाटी सभ्यता की स्थापत्य कला के प्रमाण उपलब्ध है। इसी प्रकार आहड़ सभ्यता की स्थापत्य कला उदयपुर के पास तथा मौर्यकाल मे प्रस्फुटित सभ्यता के चिन्ह बैराठ मे मिले है।
2. **सौष्ठव।**
3. **अलंकृत पद्धति।**
4. **विषयों की विविधता-** इससे यहां के शासकों तथा निवासियों की विचारधाराओं, अनुभूतियों और उद्देश्यों की जानकारी प्राप्त होती है।
5. **हिन्दु स्थापत्य कला के रूप मे-** राजस्थान मे सबसे प्रमुख स्थापत्य कला राजपूतों की रही है, जिसके कारण सम्पूर्ण राजस्थान किलों मन्दिरों, परकोटों, राजाप्रासादों, जलाशयों उद्योगों, स्तम्भों तथा समाधियों एवं छतरियों से भर गया है।
6. **शोर्य व सुरक्षाभाव से परिपूर्ण।**
7. **हिन्दु व मुस्लिम स्थापत्य का समन्वय-** मुगलों के सम्पर्क के पूर्व यहाँ हिन्दू स्थापत्य शैली की प्रधानता रही जिसमें स्तम्भों, सीधे पाटों, ऊंचे शिखरों, अलंकृत आकृतियों, कमल और कलश का महत्व था। मुगल काल में राजस्थान की स्थापत्य कला पर मुगलशैली का प्रभाव पड़ा। इस शैली की विशेषताऐं थी- नोकदार तिपतिया, मेहराव, मेहरावी डाटदार छतें, इमारतों का इठपहला रूप, गुम्बज, मीनारे आदि। दोनों शैलियों के समन्वय से राजस्थानी स्थापत्य का रूप निखर आया। हिन्दू कारीगरों ने मुस्लिम आदेशों के अनुरूप जिन भवनों का निर्माण किया हैं उन्हें सुप्रसिद्ध कला विशेषज्ञ फर्गुसन ने **इण्डों-सारसेनिक शैली** की संज्ञा दी है।

किला/दुर्ग स्थापत्य

कौटिल्य का कहना है कि राजा को अपने शत्रुओं सें सुरक्षा के लिए राज्य की सीमाओं पर दुर्गो का निर्माण करवाना चाहिये। राजस्थान में प्राचीन काल से ही राजा महाराजा अपने निवास की सुरक्षा के लिए, सामग्री संग्रह के लिए, आक्रमण के समय अपनी प्रजा को सुरक्षित रखने के लिए तथा पशुधन को बचाने के लिए विभिन्न आकार-प्रकार के दुर्गो का निर्माण करते रहे है। प्राचीन लेखकों, ने दुर्ग को राज्य का अनिवार्य अंग बताया है। शुक्रनीतिसार के अनुसार राज्य के सात अंग माने गए है जिनमे से एक दुर्ग है। इसीलिए किलों की अधिक संख्या अपने अधिकार में रखना एक गौरव की बात मानी जाती थी। अतः किलों की स्थापत्य कला राजस्थान में बहुत अधिक विकसित हुई। शुक्रनीतिसार के अनुसार दुर्ग के नौ भेद बताए गये है-

एरण दुर्ग-खाई, तथा पत्थरों से जिनके मार्ग दुर्गम बने हो।

पारिख दुर्ग-जो चारों तरफ बहुत बड़ी खाई से घिरा हो।

परिध दुर्ग-जो चारों तरफ ईट, पत्थर तथा मिट्टी से बने परकोटों से घिरा हो।

वन दुर्ग-जो बहुत बड़े-बड़े कांटेदार वृक्षों के समूह द्वारा चारो तरफ से घिरा हो।

धन्व दुर्ग-जो चारों तरफ बहुत दूर तक मरूभूमि से घिरा हो।

जल दुर्ग-जो चारों तरफ विस्तृत जलराशि से घिरा हो।

गिरी दुर्ग-जो किसी एकान्त पहाड़ी पर जल प्रबंध के साथ हो।

सैन्य दुर्ग-व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से जो अभेध (आक्रमण द्वारा अजेय) हो।

सहाय दुर्ग-जिससें सूर तथा सदा अनुकूल रहने वाले वान्धव रहते हो।

उपरोक्त सभी दुर्गो मे सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। राजस्थान के शासकों ने इसी दुर्ग निर्माण परम्परा का पालन किया। लेकिन मध्यकाल में मुस्लिम प्रभाव से दुर्ग स्थापत्य कला में एक नया मोड़ आया। जब ऊँची-ऊँची पहाड़ियों के जो ऊपर चौड़ी होती थी और जहाँ खेती और सिंचाई के साधन हो दुर्ग बनाने के काम मे ली जाने लगी और ऐसी पहाड़ियों पर प्राचीन दुर्ग बने हुए थे तो उन्हें फिर से नया रूप दिया गया।

गिरी दुर्गो मे चित्तौड़ का किला सबसे प्राचीन तथा सब किलों का सिरमौर है। इसके लिए उक्ति प्रचलित है- गढ़ तो चित्तौड़ गढ़, बाकी बस गढ़ैया, जो इसकी देशव्यापी ख्याति का प्रमाण है। गिरि दुर्गो में कुंभलगढ़, रणथम्भौर, सिवाणा, जालौर, अजमेर का तारागढ़ (गढवीटली), जोधपुर का मेहरानगढद्व आमेर का जयगढ़ स्थापत्य की दृष्टि से उत्कृष्ट गिरी दुर्ग है। जल दुर्ग की कोटि में गागरोण दुर्ग (झालावाड़) आता है। स्थल (धान्वय) दुर्गो में जैसलमेर का किला प्रमुख है, जिसे सिर्फ प्रस्तर खण्डों को जोड़कर बनाया गया है। इसमें कहीं भी चूने का प्रयोग नहीं है। जूनागढ़ (बीकानेर) तथा नागौर का किला भी स्थल दुर्गो की कोटि में आते है। जूनागढ़ का किला रेगिस्तान के किलों मे श्रेष्ठ है। राजस्थान के समस्त किले बड़े ही सुदृढ़ तथा सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत है और साथ ही स्थापत्य कला की उत्कृष्टता संजोये हुये है।

आमेर दुर्ग

यह दुर्ग अपने स्थापत्य की दृष्टि से अन्य दुर्गो से सर्वथा भिन्न है। प्रायः सभी दुर्गो में, जहाँ राजप्रासाद प्राचीन के भीतर समतल भू-भाग पर बने पाये जाते है, वहीं आमेर दुर्ग में राजमहल ऊँचाई पर पर्वतीय ढलान पर इस तरह बने है कि इन्हें ही दुर्ग का स्वरूप दिया लगता है। इस किले की सुरक्षा व्यवस्था काफी मजबूत थी, फिर भी कछवाहा शासकों के शौर्य और मुगल शासकों से राजनीतिक मित्रता के कारण यह दुर्ग बाहरी आक्रमणों से सदैव बचा रहा। आमेर दुर्ग के नीचे मावठा तालाब और दौलाराम का बाग खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है। इस किले मे बने शिलादेवी, जगतशिरोमणि और अम्बिकेश्वर महादेव के मन्दिरों का ऐतिहासिक काल से ही महत्व रहा है।

निर्माण कैप्सूल

- जयपुर- कच्छवाहों की पुरान राजधानी।
- निर्माण-राजा मानसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह, सवाई जयसिंह।
- दुर्ग के नीचे मावठा तालाब और दिलाराम का बाग।
- प्राचीन शिलालेख, अलंकृत पाषाण स्तम्भ।
- **दीवान-ए-आम**- यहाँ राजा का आम दरबार होता था। राजा यहाॅ जन सामान्य से मिलता। निर्माण-मिर्जा राजा जयसिंह।
- गणेशपोल-भव्य और अलंकृत प्रवेश द्वार, जहाँ से महलों के आंतरिक भाग में जाया जा सकता था, निर्माण-सवाई जयसिंह।
- **दीवान-ए-खास**- इसे जय मंदिर कहते हैं, यहाँ पर राजा अपने विशिष्ट सामन्तों और अन्य प्रमुख लोगों से विचार विमर्श करता था।, निर्माण- मिर्जा राजा जयसिंह
- **शीश महल**- आमेर के महलों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और चर्चित -छत और दीवारों पर कांच की सुन्दर जड़ाई। एक मोमबत्ती जलाते ही व्यक्ति के सैकड़ों प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ते हैं।
- **यंश मंदिर**-दीवान-ए-खास की छत पर निर्मित इसमें सफेद संगमरमर की सुन्दर व अलंकृत जालिया लगी, जहाँ से रानियां दीवान ए खास का दृश्य देखा करती थी।
- **सौभाग्य मंदिर**- यह एक आयताकार महल है जो रानियों के मनोविनोद तथा हास परिहास का स्थान था।
- **सुख मंदिर**- दीवान-ए खास के सामने बगीचे के दूसरी तरफ निर्मित सुख मंदिर राजाओं का ग्रीष्मकालीन निवास
- राजा पृथ्वीराज की रानी बालाबाई की साल।
- बिशप हैबर- ''मैने क्रेमलिन में जो कुछ देखा है और अलब्रह्मा के बारे में जो कुछ सुना है, उससे भी बढ़कर ये महल है।''
- नोटः- हाल ही में इस दुर्ग को यूनेस्कों की सांस्कृतिक **धरोहर सूची में शामिल किया गया है।**

कुंभलगढ़ दुर्ग

वर्तमान राजसमन्द जिले में अरावली पर्वतमाला की चोटी पर स्थित कुंभलगढ़ दुर्ग का निर्माण राणा कुंभा ने करवाया था। इस दुर्ग के शिल्पी मंडन मिश्र थे। कुंभलगढ़ संभवतः भारत का ऐसा किला है, जिसकी प्राचीर 36 किमी तक फैली है। दुर्ग रचना की दृष्टि से यह चित्तौड़ दुर्ग से ही नहीं बल्कि भारत के सभी दुर्गो में विलक्षण और अनुपम है। कुंभलगढ़ के भीतर ऊँचे भाग पर राणा कुंभा ने अपने निवास हेतु 'कटारगढ़' नामक अंतःदुर्ग का निर्माण करवाया था। इसी कटारगढ़ में राणा उदयसिंह का राज्याभिषेक और महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था। कुंभलगढ़ मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी रहा है। किले के भीतर कुंभश्याम मंदिर, कुंभा महल, झाली रानी का महल आदि प्रसिद्ध इमारते है।

निर्माण कैप्सूल

- निर्माण-महाराणा कुम्भा (1448) , उद्देश्य -गोड़वाड़ क्षेत्र की सुरक्षा के लिए।
- राजस्थान का सबसे दुर्भेद्य दुर्ग, भारतीय आदर्शों के अनुरूप निर्मित।
- मेवाड़ -मारवाड़ की सीमा पर
- अरावली पर्वतमाला में स्थित।
- संकटकाल में मेवाड़ राजपरिवार का आश्रय स्थल। श्वेत, नील, हेमकूट, निषाद।
- **अबुल फजल**-''यह इतनी बुलन्दी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।''
- ऊंचाई-समुद्रतल से 3500 फीट।
- शिल्पी -मण्डन।
- अकबर के सेनापति शाहबाज खां के अलावा कोई भी इसे जीत नहीं सका। (1578)।
- **लघु दुर्ग** - कटारगढ़ (मेवाड़ की आंख), इसमें उदयकरण द्वारा कुंभा की हत्या, पन्ना धाय ने उदयसिंह का पालन पोषण किया, उदयसिंह का राज्यभिषेक।
- महाराणा प्रताप का जन्म (9 मई, 1540 ई.) पारिध दुर्ग की श्रेणी में।
- इसमें-कुंवर पृथ्वीराज सिसोदिया की छतरी, नीलकण्ठ महादेव मंदिर, बादल महल, झाली रानी का मालिया (उदयसिंह की रानी) झाली बावड़ी, ममादेव कुण्ड।
- **नोट :-हाल ही में इस दुर्ग को यूनेस्कों की सांस्कृतिक धरोहर सूची में शामिल किया गया है।**

गागरोन का किला

झालावाड़ से चार किमी दूरी पर अरावली पर्वतमाला की एक सुदृढ़ चट्टान पर कालीसिन्ध और आहू नदियों के संगम पर बना यह किला जल दुर्ग की श्रेणी में आता है। इस किले का निर्माण कार्य डोड राजा बीजलदेव ने बारहवीं सदी में करवाया था। दुर्गम पथ, चौतरफा विशाल खाई तथा मजबूत दीवारों के कारण यह दुर्ग अपने आप में अनूठा और अद्भुत है। यह दुर्ग शौर्य ही नही भक्ति और त्याग की गाथाओं का साक्षी है।

संत रामानन्द के शिष्ट संत पीपा इसी गागरोन के शासक रहे है, जिन्होंने राजसी वैभव त्यागकर राज्य अपने अनुज अचलदास खींची को सौंप दिया था। गागरोन में मुस्लिम संत पीर मिट्ठे साहब की दरगाह भी है, जिनका उर्स आज भी प्रतिवर्ष यहाँ लगात है। यह किला अचलदास खींची की वीरता के लिए प्रसिद्ध रहा है जो 1423 में मांडू के सुल्तान हुशंगशाह से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। युद्धोपरान्त रानियों ने अपनी रक्षार्थ जौहर किया।

निर्माण कैप्सूल

- जलदुर्ग- मुकन्द पहाड़ी पर।
- कालीसिन्ध और आहू नदियों के संगम स्थल पर।
- निर्माण-डोट (परमार) राजपूतों द्वारा।
- उपनाम- डोडगढ़ या धुलरगढ़।
- गागरोण के खींची राजवंश के संस्थापक देवसिंह (उर्फ धारू) ने बीजलदेव नामक डोड शासक को (जो उसका बहनोई) मारकर अधिकार, नाम गागरोन रखा।
- 1303ई. जैतसिंह खींची के समय खुरासान से प्रसिद्ध सूफी संत हमीदुददीन चिश्ती गागरोन आये, यहीं समाधि, (मीठ्ठे साहब), प्रतापसिंह खींची ने फिरोज तुगलक को पराजित किया (पीपाजी नाम से लोकप्रिय)

- 1423ई. मांडू के सुल्तान अल्प खाँ गोरी (होशंग शाह) के आक्रमण के समय राजा अचलदास खींची थे, (प्रथम साका)।
- महमूद खिलजी ने इसमें 'मुस्तफाबाद' नाम से लघु दुर्ग बनवाया।
- अकबर की अबुल फजल के बड़े भाई फैजी से भेंट।
- पृथ्वीराज राठौड़ ने 'वेलि किसन रूक्मणी री' इसी दुर्ग में लिखी।
- इसमें- जौहर कुण्ड, बारूद खाना, नक्कारखाना, कोटा राज्य की टकसाल, शीतला माता मंदिर, संत पीपा की छतरी, बुलन्द दरवाजा (औरंगजेब)।
- गीधकराई पहाड़ी-युद्ध (राजनैतिक) बन्दी को मृत्युदण्ड देने के लिए फेंका जाता।
- नोट:- हाल ही में इस दुर्ग को यूनेस्कों की सांस्कृतिक धरोहर सूची में शामिल किया गया है।

चित्तौड़ का किला

राजस्थान के किलों मे क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा चित्तौड़ का किला है। यह दुर्ग वीरता, त्याग, बलिदान, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में देश भर में विख्यात है। सात प्रवेश द्वारों से निर्मित इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने करवाया था। यह किला गंभीरी और बेड़च नदियों के संगम पर स्थित है। दिल्ली से मालवा और गुजरात जाने वाले मार्ग पर अवस्थित होने के कारण मध्यकाल में इस किले का सामरिक महत्व था। 1303 में इस किले को अलाउद्दीन खिलजी ने तथा 1534 में गुजरात के बहादुरशाह ने अपने अधिकार मे ले लिया था। 1567-1568 में अकबर ने चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण करके यहाँ भयंकर नरसंहार करवाया था। चित्तौड़गढ़ में इतिहास प्रसिद्ध साकों में 1303 का रानी पद्मिनी का जौहर और 1534 का रानी कर्णावती का जौहर मुख्य है। इस किले के साथ गोरा-बादल, जायमल-पत्ता की वीरता तथा पन्नाधाय के त्याग की अमर गाथाएँ जुड़ी है।

चित्तौड़गढ़ के भीतर राणा कुंभा द्वारा निर्मित कीर्तिस्तम्भ अपने शिल्प और स्थापत्य की दृष्टि से अनूठा है। इस किले के भीतर निर्मित महलों और मन्दिरों मे रानी पद्मिनी का महल, नवलखा भण्डार, कुंभश्याम मंदिर, समिद्धेश्वर मंदिर, मीरा मंदिर, कालिका माता मंदिर, शृंगार चँवरी आदि दर्शनीय है।

✍ निर्माण कैप्सूल ✍

- राजस्थान का गौरव, किलों का सिरमौर, गढ़ तो चित्तौड़ बाकी सब गढैया।
- गंभीर व बेडच नदियों के संगम स्थल के समीप।
- अरावली पर्वतमाला में, क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा (8km , 2 km चौड़ा)।
- उपनाम-चित्रकोट।
- निर्माण मौर्य राजा चित्रांगद। कुमारपाल चरित के अनुसार निर्माण चित्रांग ने करवाया। आकार व्हेल मछली के समान। दीवार की लम्बाई 10.5km।
- इतिहास प्रसिद्ध तीन साकों हेतु प्रसिद्ध (1303, 1534, 1568)
- बप्पा रावल ने आठवीं शताब्दी में यह दुर्ग मान मौर्य से जीता (734 ई.), अलाउद्दीन ने इसका नाम खिज्राबाद रखा।
- राणा सज्जा व सिंहा का स्मारक।
- जयमल राठौड़, वीर कला राठौड़ का स्मारक।
- पत्ता सिसोदिया का स्मारक।
- नौ कोठा मकान या नवलखा भण्डार, समिधेश्वर मंदिर, मीराबाई मंदिर।
- तुलजा भवानी का मंदिर, कालिका माता का मंदिर (दसवीं शताब्दी के आस-पास बना सूर्य मंदिर), सतवीस देवरी (जैन मंदिर 11 वीं सदी में निर्मित)।
- श्रृंगार चौरी (जैन मंदिर), जैन कीर्ति स्तम्भ:- सात मंजिला, आदिनाथ का स्मारक, निर्माण बघेरवाल जैन जीजा द्वारा 10 वीं या 11 वीं शताब्दी।
- भामाशाह की हवेली। हिंगलू आहड़ा के महल।
- फतहप्रकाश महल-राजकीय संग्रहालय।
- राज्य का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट।
- **ह्यूज केसन**-''चित्तौड़ सुनसान परित्यक्त किले में विचरण करते समय मुझे ऐसा लगता मानों में किसी भीमकाय जहाज की छत पर चल रहा हूँ।''
- **नोट :-हाल ही में इस दुर्ग को यूनेस्कों की सांस्कृतिक धरोहर सूची में शामिल किया गया है।**

जालौर का किला

सोनगिरि पहाड़ी पर स्थित यह किला सूकड़ी नदी के किनारे बना हुआ है। शिलालेखों में जालौर का नाम जाबालिपुर और किले का नाम सुवर्णगिरि मिलता है। इस किले का निर्माण प्रतिहारों द्वारा आठवीं सदी में करवाया गया था। इस किले पर परमार, चौहान, सोलंकियों, तुर्की और राठौड़ों का समय-समय पर आधिपत्य रहा। किले के भीतर बनी तोपखाना मस्जिद जो पूर्व मे परमार शासक भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला थी, बहुत आकर्षक है। यहाँ का प्रसिद्ध शासक कान्हड़दे चौहान (1305-1311) था, जो अलाउद्दीन खिलजी से लड़ता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ।

✍ निर्माण कैप्सूल ✍

- जाबालिपुर, जालहुर।
- सोनगिर (सुवर्णगिरि) व कनकाचल पहाड़ी पर।
- सोनगढ़।
- चौहानों की 'सोनगरा' शाखा का शासन।
- डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार प्रतिहार राजा 'नागमह प्रथम' निर्माता।
- कीर्तिपाल ने सर्वप्रथम चौहानों की शाखा स्थापित की।
- हसन निजामी-''जालौर बहुत ही शक्तिशाली और अजेय दुर्ग है, जिसके द्वार कभी किसी विजेता के द्वारा नहीं खोले गये चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हों।''
- इसमें महाराजा मानसिंह के महल, जोगमाया मन्दिर, चामुण्डा माता मन्दिर, दहियों की पोल, सन्त मल्लिक शाह की दरगाह, परमार कालीन कीर्ति स्तम्भ, परमार राजा भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला, जहां पर वर्तमान में तोपखाना।
- सूकड़ी नदी किनारे।
- 778 ई. जैन आचार्य उद्योतन सूरि ने कुवलय माला ग्रंथ की रचना की।

जूनागढ़ का किला

बीकानेर स्थित जूनागढ़ किले का निर्माण राठौड़ शासक रायसिंह ने करवाया था। यहाँ पूर्व मे स्थित पुराने किले के स्थान पर इस किले का निर्माण करवाने के कारण इसे जूनागढ़ के नाम से जाना जाता है। जूनागढ़ के आन्तरिक प्रवेश द्वार सूरजपोल के दोनों तरफ जयमल मेड़तियाँ और फत्ता सिसोदिया की गजारूढ़ मूर्तियाँ स्थापित है, जो उनके पराक्रम और बलिदान का स्मरण कराती है। सूरजपोल पर ही रायसिंह प्रशस्ति उत्कीर्ण है। शिल्प सौन्दर्य की अनूठी मिशाल लिए जूनागढ़ किले मे बने महल और उनकी बनावट मुगल स्थापत्य कला की बरबस ही याद दिलाते है। किले मे कुल 37 बुर्जे है, जिनके ऊपर कभी तोपें रखी जाती है। सम्भवत: राजस्थान का यह एक मात्र ऐसा किला है, जिसकी

दीवारें, महल इत्यादि मे शिल्प सौन्दर्य का अद्‌भुत मिश्रण है। गंगा निवास जूनागढ़ का ऐसा हॉल है, जिसमें पत्थर की बनावट और उस पर उत्कीर्ण कृष्ण रासलीला दर्शनीय है। फूलमहल, गजमंदिर, अनूप महल, कर्ण महल, लाल निवास, सरदार निवास इत्यादि इस किले के प्रमुख वास्तु है।

✍ निर्माण कैप्सूल ✍

- जमीन का जेवर।
- निर्माण-महाराजा रायसिंह ने (1588-1593)।
- राव बीकाजी ने 1485 ई. बीकानेर के पुराने गढ़ की नीवं रखी, बीकाजी द्वारा बनाई गढ़ी को बीकाजी की टेंकरी कहते हैं।
- चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति-राताघाटी किला भी कहते है।
- 37 बुर्जे, धान्वन व पारिख दुर्ग की श्रेणी।
- सूरजपोल दरवाजे पर रायसिंह प्रशस्ति अंकित। सूरजपोल दरवाजे के दोनों ओर जयमल मेड़तियां एंव पत्ता सिसोदिया की मूर्तियां स्थापित (औरंगजेब ने इस मूर्तियों को हटवा दिया)।
- प्रांगण के दुर्लभ प्राचीन वस्तुओं, शस्त्रों, देवप्रतिमाओं, विविध प्रकार के पात्रों और फारसी व संस्कृत में लिखित हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रहालय।
- तैतींस करोड़ देवी देवताओं का मंदिर।
- टैस्सीटोरी द्वारा रंगमहल व बडोपल से प्राप्त वस्तुएं यहीं पर मौजूद।
- रेगिस्तान का सर्वश्रेष्ठ दुर्ग।
- अनूप महल मे बीकानेर के राजाओं का राजतिलक।

जैसलमेर का किला

राजस्थान की स्वर्णनगरी कहे जाने वाले जैसलमेर में त्रिकूट पहाड़ी पर पीले पत्थरों से निर्मित इस किले को 'सोनार का किला' भी कहा जाता है। इसका निर्माण बारहवीं सदी में भाटी शासक राव जैसल ने करवाया था। दूर से देखने पर यह किला पहाड़ी पर लंगर डाले एक जहाज का आभास कराता है। दुर्ग के चारों ओर घाघरानुमा परकोटा बना हुआ है, जिसे 'कमरकोट' अथवा 'पाडा' कहा जाता है। इसे बनाने में चूने का प्रयोग नहीं किया गया बल्कि कारीगरों ने बड़े-बड़े पीले पत्थरों को परस्पर जोड़कर खड़ा किया है। 99 बुर्जो वाला यह किला मरूभूमि का महत्वपूर्ण किला है। किले के भीतर बने प्राचीन एवं भव्य जैन मंदिर-पार्श्वनाथ और ऋषभदेव मंदिर अपने शिल्प एवं सौन्दर्य के कारण आबू के देलवाड़ा जैन मंदिर के तुल्य है। किले के महलो में रंगमहल, मोती महल, गजविलास और जवाहर विलास प्रमुख है। जैसलमेर का किला इस रूप में भी खासा प्रसिद्ध है कि यहाँ पर दुर्लभ और प्राचीन पाण्डुलिपियों का अमूल्य संग्रह है।

जैसलमेर का किला 'ढाई साके' के लिए प्रसिद्ध है। पहला साका अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) के आक्रमण के दौरान, दूसरा साका फिरोज तुगलक (1351-1388) के आक्रमण के दौरान हुआ था। 1550 के कंधार के अमीर अली ने यहाँ के भाटी शासक लूणकरण को विश्वासघात करके मार दिया था परंतु भाटियो की विजय होने के कारण महिलाओं ने जौहर नहीं किया। यह घटना 'अर्द्ध साका' कहलाती है।

✍ निर्माण कैप्सूल ✍

- सोनारगढ़, सोनगढ़।
- निर्माण-1155 ई. भाटी राजा जैसल (12 जुलाई, 1155 ई.)।
- जैसल के पुत्र शालिवाहन II ने दुर्ग का अधिकांश निर्माण करवाया।
- त्रिकुटाकृति-जो त्रिकुट पहाड़ी पर बना।
- 99 बुर्जे बनी। (सर्वाधिक बुर्जे)
- लक्ष्मीनारायण मंदिर, हस्तलिखित ग्रन्थों का सबसे बड़ा संग्रह, जैन आचार्य जिन भद्र सूरी के नाम पर जिन भद्र सूरी ग्रन्थ भण्डार।
- इतिहास, साहित्य व कला का त्रिवेणी संगम।
- राज्य का दूसरा सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट।
- सत्यजीत रे ने ''सोनार बांग्ला'' नामक फिल्म बनाई।
- दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता मानो समुद्र में लंगर डाले जहाज खड़ा है।
- इतिहास में प्रसिद्ध 2 1/2 (ढाई) साका हेतु प्रसिद्ध
- प्रथम साका-राव मूलराज के शासन काल में अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण (1314)।
- द्वितीय साका-राव दूदा व उसके पुत्र त्रिलोकसी के शासन काल मे फिरोजशाह तुगलक का आक्रमण (14 वीं शताब्दी)।
- तृतीया साका- 1550 ई. राव लुणकरण के (अर्द्ध साका) समय कंधार के अमीर अली पठान का आक्रमण।
- **नोट :-हाल ही में इस दुर्ग को यूनेस्को की सांस्कृतिक धरोहर सूची में शामिल किया गया है।**

तारागढ़ (अजमेर)

अजमेर में स्थित तारागढ़ को 'गढ़बीठली' के नाम से भी जाना जाता है। चौहान शासक अजयराज (1105-1133) द्वारा निर्मित इस किले के बारे में मान्यता है कि राणा सांगा के भाई कुँवर पृथ्वीराज ने इस किले के कुछ भाग बनवाकर अपनी पत्नी तारा के नाम पर इसका नाम तारागढ़ रखा था। तारागढ़ के भीतर 14 विशाल बुर्जे, अनेक जलाशय और मुस्लिम संत मीरान साहब की दरगाह बनी हुई है।

✍ निर्माण कैप्सूल ✍

- ''गौड़ पंवार सिसोदिया, चहुवाणां चितचारे।
  तारागढ़ अजमेर रो गरवीजै गढ़ जोर।''
- गढ़ बीठली दुर्ग, संस्थापक-अजयराज चौहान (1113 ई.), अरावली पर्वत माला में स्थित।
- कुंवर पृथ्वीराज की पत्नी ताराबाई के नाम पर तारागढ़।
- शाहजहां के शासन काल में विट्टलदास ने जीर्णोद्वार करवाया, 1644 से 1656 ई. तक विट्टलदास दुर्गाध्यक्ष रहा।
- भारत का प्रथम गिरि दुर्ग माना जाता।
- इसमें संत मीरान साहब की दरगाह (किले के प्रथम गवर्नर मीर सैय्यद खिंगसवार की है जो 1202 ई. में शहीद हुए), प्राचीन गुफा, शीशाखान (दुर्ग के नीचे स्थित जो गर्मियों में ठण्डी व सर्दी में गरम रहती है।)
- रूठी रानी का महल।

तारागढ़ (बूँदी)

बूँदी का दुर्ग तारागढ़ पर्वत की ऊँचा चोटी पर तारे के समान दिखाई देने के कारण 'तारागढ़' के नाम से प्रसिद्ध है। हाड़ा शासक बरसिंह द्वारा चौदहवीं सदी मे बनवाये गये इस किले को मालवा के महमूद खिलजी, मेवाड़ के राणा क्षेत्रसिंह और जयपुर के सवाई जयसिंह के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। यहाँ के शासक सुर्जन हाड़ा द्वारा 1569 में अकबर की अधीनता स्वीकारने के कारण यह किला अप्रत्यक्ष रूप से मुगल अधीनता में चला गया। तारागढ़ के महलों के भीतर सुन्दर चित्रकारी (भित्तिचित्र) हाड़ौती कला के सजीव रूप का प्रतिनिधित्व करती है। किले मे छत्र महल, अनिरूद्ध महल, फूल महल इत्यादि बने हुये है।

निर्माण कैप्सूल

- निर्माण-राव बरसिंह (1354 ई.), उद्देश्य-मेवाड़, मालवा और गुजरात की ओर से संभावित आक्रमणों से सुरक्षा हेतु।
- धरती से आकाश की ओर देखने पर तारे की आकृति का प्रतीत होती है।
- इसमें -छत्र महल, अनिरूद्ध महल, रतन महल, बादल महल, फूल महल, जीवरखा महल, दीवान ए आम, सिलह खाना, नौबत खाना, दूधा महल, 84 खंभों की छतरी, शिकार बुर्ज।
- राणा लाखा इस दुर्ग को कभी जीत नहीं पाए तो मन की शांति के लिए इस पर अधिकार के लिए मिट्टी का दुर्ग बना विजय प्राप्त की।
- 'गुर्भ गुंजन' तोप तोप रखी गयी।

नाहरगढ़

जयपुर के पहरेदार के रूप मे प्रसिद्ध इस किले का निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया था। इस किले को सुदर्शनगढ़ के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस किले का निर्माण सवाई जयसिंह ने मराठों के विरूद्ध सुरक्षा की दृष्टि से करवाया था। इस किले में सवाई माधोसिंह ने अपनी नौ पासवानों के नाम पर एक समान नौ महल बनवाये।

निर्माण कैप्सूल

- जयपुर, उपनाम-मीठड़ी का किला।
- इस किले को सुदर्शनगढ़ के नाम से भी जाना जाता है।
- निर्माण-सवाई जयसिंह (1734ई.), भव्य और सुदृढ़ दुर्ग जयपुर के मुकुट के समान है तथा शहर की ओर झाकता हुआ सा प्रतीत होता है।
- उद्देश्य-मराठों के विरूद्ध सुरक्षा।
- सवाई माधोसिंह-II ने अपनी नौ प्रेयसियों के नाम पर यहाँ नौ इकमंजिले और दुमंजिले महलों का निर्माण करवाया।
- इसमें जयपुर के विलासी महाराजा सवाई जगतसिंह की प्रेयसी रसकपूर भी कुछ अरसे तक कैद रही थी।

जोधपुर दुर्ग

- निर्माण -12 मई 1459 विक्रम संवत 1515 ज्येष्ठ सुदी (शनिवार)
- चिड़िया टूंक पहाड़ी पर।
- मयूरध्वज गढ (मोरध्वज गढ़)
- धन्ना और भींवा (मामा और भान्जा) की छतरी बनी हुई है। 1544 ई. शेरशाह ने मस्जिद का निर्माण करवाया।
- **मोती महल :** महाराजा सूरसिंह ने विक्रम संवत् 1602 ई.) के लगभग निर्मित। इसकी छत व दीवारों पर सोने का पालिश का काम महाराजा तख्तसिंह द्वारा।
- **फूल महल :** पत्थर की बारीक खुदाई व कोराई के लिए प्रसिद्ध। महाराजा अभयसिंह द्वारा निर्मित (विक्रम संवत् 1781)।
- चौखेलाव महल।
- महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश : पुस्तकालय।
- श्रृंगार चौकी (चंवरी)-महाराजा तखतसिंह द्वारा निर्मित, राजाओं का राजतिलक होता।
- चामुण्डा माता मंदिर।
- राणीसर और पदमसर तालाब।
- 9 अगस्त, 1857 को महाराजा तख्तसिंह के शासनकाल में दुर्ग में स्थित बारूद खाने पर आकाशीय बिजली गिरने से 150 लोगों की मृत्यु।
- 30 सितम्बर 2008 को चामुण्डा माता मंदिर हादसा 217 लोगों की मृत्यु।

रणथम्भौर दुर्ग

सवाई माधोपुर शहर के निकट स्थित रणथम्भौर दुर्ग अरावली पर्वत की विषम आकृति वाली सात पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह किला यद्यपि एक ऊँचे शिखर पर स्थित है, तथापि समीप जाने पर ही दिखाई देता है। यह दुर्ग चारों और से घने जंगलों से घिरा हुआ है तथा इसकी किलेबन्दी काफी सुदृढ़ है। इसलिए अबुल फज़ल ने इसे बख्तरबंद किला कहा है। ऐसी मान्यता है कि इसका निर्माण आठवीं शताब्दी मे चौहान शासकों ने करवाया था।

हम्मीर देव चौहान की आन-बान का प्रतीक रणथम्भौर दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी ने 1301 में ऐतिहासिक आक्रमण किया था। हम्मीर विश्वासघात के परिणामस्वरूप लड़ता हुआ वीरगति से प्राप्त हुआ तथा उसकी पत्नी रंगादेवी ने जौहर कर लिया। यह जौहर राजस्थान के इतिहास का प्रथम जौहर माना जाता है। रणथम्भौर किले में बने हम्मीर महल, हम्मीर की कचहरी, सुंपारी महल, बादल महल, बत्तीस खंभों की छतरी, जैन मंदिर तथा त्रिनेत्र गणेश मंदिर उल्लेखनीय है। गणेश मंदिर की विशेष मान्यता है।

निर्माण कैप्सूल

- निर्माण -आठवीं शताब्दी के लगभग, अजमेर के चौहान शासकों ने।
- हम्मीर की आन, बान व शान का प्रतीक।
- एरण दुर्ग, गिरि दुर्ग (अरावली पर्वत माला में)।
- अबुल फजल-''बाकी सबदुर्ग नगें केवल यही दुर्ग है जो बख्तर बन्द है।''
- दर्शनीय स्थल-जिनेत्री गणेश मन्दिर (रणतभंवर के लाडला, गौरापुत्र गणेश), त्रिपोलिया दरवाजा (अंधेरी दरवाजा), हम्मीर महल, रानी महल, हम्मीर की कचहरी, सुपारी महल (इसमें मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर बने है), बादल महल, जौरा-भौरा (अनाज के गोदाम), 32 खंभों की छतरी (हम्मीर ने अपने पिता जयसिंह (जैत्रसिंह) के 32 वर्षा के शासन काल की याद मे बनवाई पीर सदरूद्दीन की दरगाह, लक्ष्मीनारायण मंदिर, पदमला तालाब, नौलखा दरवाजा, रनिहाड तालाब।
- अकबर ने जगन्नाथ कच्छवाह को जागीर में दे दिया। मुगल काल में शाही कारागर के रूप में उपयोग।
- जयपुर के सवाई माधोसिंह प्रथम ने सामंत अनूपसिंह खंगारोत के प्रयासों से दुर्ग को जयपुर में मिला दिया जो एकीकरण तक रहा।
- अकबर ने शाही टकसाल स्थापित की।
- नोट :-हाल ही में इस दुर्ग को यूनेस्कों की सांस्कृतिक धरोहर सूची में शामिल किया गया है।

लोहागढ़

राजस्थान के सिंहद्वार भरतपुर मे जाट राजाओं की वीरता एवं शौर्य गाथाओं को अपने आंचल मे समेटे लोहागढ़ का किला अजेयता एवं सुदृढ़ता के लिए प्रसिद्ध है। जाट शासक सूरजमल ने इसे 1733 में बनवाया था। लोहागढ़ को यहाँ पूर्व में एक मिट्टी की गढ़ी को विकसित करके वर्तमान रूप में परिवर्तित किया गया। किले के प्रवेश्द्वार पर अष्टधातु निर्मित कलात्मक और महबूत दरवाजा आज भी लोहागढ़ का लोहा मनवाता प्रतीत होता है। इस कलात्मक दरवाजे को महाराजा जवाहरसिंह 1765 में दिल्ली से विजय करके लाये थे। इस किले की अभेद्यता का कारण इसकी दीवारों की चौड़ाई है। किले की बाहरी प्राचीर मिट्टी की बनी है तथा इसके चारों ओर एक गहरी खाई है। अंग्रेज जनरल लॉर्ड लेक ने तो अपनी विशाल सेना और तोपखाने के साथ पाँच बार इस किले पर चढ़ाई की परंतु हर बार उसे पराजय का सामना करना पड़ा। किले मे बने किशोरी महल,

जवाहर बुर्ज, कोठी खास, दादी माँ का महल, वजीर की कोठी, गंगा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर आदि दर्शनीय है।

निर्माण कैप्सूल

- पूर्वी सीमान्त प्रहरी।
- मिट्टी से निर्मित।
- पारिख व पारिध की श्रेणी में।
- निर्माण-1733ई. महाराजा सूरजमल, जहाँ नींव रखी वहाँ खेमकरण जाट की गढ़ी थी।
- विमान के आविष्कार से पूर्व इसे जीतना मुश्किल माना जाता था।
- इसमें मोतीझील से सुजानगंगा नहर से पानी लाया जाता है।
- जवाहर बुर्ज- सबसे प्रमुख महाराजा जवाहर सिंह की दिल्ली विजय की याद में।
- फतेह बुर्ज-1806ई. अंग्रेजों पर विजय का प्रतीक।
- 1805 जनरल लेक ने रणजीत सिंह के समय आक्रमण रणजीतसिंह द्वारा मराठा जसवंतराव होल्कर को शरण देने के कारण।

मेहरानगढ़

सूर्यनगरी के नाम से विख्यात जोधपुर की चिड़ियाटूक पहाड़ी पर राव जोधा ने 1459 में मेहरानगढ़ का निर्माण करवाया था। मयूर की आकृति मे बने इस दुर्ग को मयूरध्वज के नाम से जाना जाता है। मेहरानगढ़ दो मंजिला है। इसमें रखी लम्बी दूरी तक मार करने वाली अनेक तोपों का अपना गौरवमयी इतिहास है। इनमें किलकिला, भवानी इत्यादि तोपें अत्यधिक भारी और अद्भुत है। यह दुर्ग वीर दुर्गादास की स्वामिभक्ति का साक्षी है। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित मेहरानगढ़ वास्तुकला की दृष्टि से बेजोड़ है। इस किले के स्थापत्यों मे मोती महल, फतह महल, जनाना महल, श्रृंगार चौकी, तख्तविलास, अजीत विलास, उम्मेद विलास इत्यादि का वैभव प्रशंसनीय है। इसमें स्थिति महलों की नक्काशी, मेहराब, झरोखें और जालियों की बनावट हैरत डालने वाली है।

जयगढ़

मध्ययुगीन भारत की प्रमुख सैनिक इमारतो मे से आमेर के पास पहाड़ियों मे अवस्थित जयगढ़ दुर्ग की खास बात यह कि इसमें तोपें ढालने का विशाल कारखाना था, जो शायद की किसी अन्य भारतीय दुर्ग में रहा है। इस किले मे रखी 'जयबाण' तोप को एशिया की सबसे बड़ी तोप माना जाता है। जयगढ़ अपने विशाल पानी के टांकों के लिये भी जाना जाता है। जल संग्रहण की खास तकनीक के अंतर्गत जयगढ़ किले के चारों और पहाड़ियों पर बनी पक्की नालियों से बरसात का पानी इन टांकों मे एकत्र होता रहा है। इस किले का निर्माण एवं विस्तार में विभिन्न कछवाहा शासकों का योगदान रहा है, परंतु इसे वर्तमान स्वरूप सवाई जयसिंह ने प्रदान किया। जयगढ़ को रहस्यमय दुर्ग भी कहा जाता है, क्योकि इसमें कई गुप्त सुरंगे है। इस किले में राजनीतिक बन्दी रखे जाते थे। ऐसा माना जाता है कि मानसिंह ने यहाँ सुरक्षा की दृष्टि से अपना खजाना छिपाया था। वर्तमान में जयगढ़ किले में मध्यकालीन शस्त्रास्त्रों का विशाल संग्रहालय है। यहाँ के महल दर्शनीय है।

अकबर का किला

अजमेर मे स्थित इस किले का निर्माण 1570 में अकबर ने करवाया था। इस किले को दौलतखाना या मैग्जीन के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू-मुस्लिम पद्धति से निर्मित इस किले का निर्माण अकबर ने ख्वाजा मुइनद्दीन हसन चिश्ती के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने हेतु करवाया था। 1576 में महाराजा प्रताप के विरूद्ध हल्दीघाटी युद्ध की योजना को भी अन्तिम रूप इसी किले में दिया गया था। जहाँगीर मेवाड़ को अधीनता में लाने के लिए तीन वर्ष तक इसी किले मे रूका था। इस दौरान ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम के राजदूत सर टॉमस रो ने इसी किले में 10 जनवरी, 1616 को जहाँगीर से मुलाकात की थी। 1801 में अंग्रेजो ने इस किले पर अधिकार कर इसे अपना शस्त्रागार (मैग्जीन) बना लिया। किले मे स्थित आलीशान चित्रकारी तथा जनाने कक्षों की दीवारों मे पच्चीकारी का कार्य बड़ा कलापूर्ण ढंग से किया गया है। वर्तमान में यहाँ राजकीय संग्रहालय स्थित है।

निर्माण कैप्सूल

- अजमेर नगर में। उपनाम-अकबर का दौलत खाना व मुगल किला ।
- मुस्लिम पद्धति से बना राज्य का एक मात्र दुर्ग।
- निर्माण-1570-72 ई. अकबर।
- सर टॉमस रो का यहाँ जहाँगीर से परिचय (10 जनवरी,1616 ई.)।
- 1908 से राजपूताना संग्रहालय (इसमें गुप्तकाल से मध्यकाल की सामग्री)।
- इस किले पर कोई आक्रमण नहीं हुआ।
- इस किले में दिल्ली सरकार का 'असला'रहा इस कारण इसे मैग्जीन के नाम से जाना जाता है।
- 18 नवम्बर, 1613 से 10 नवम्बर, 1616 तक जहाँगीर इस किले में ठहरा।

भटनेर दुर्ग

- उत्तरी सीमा का प्रहरी।
- निर्माण तीसरी शताब्दी भाटी राजा भूपत।
- धान्वन दुर्ग की श्रेणी।
- महमूद गजनवी ने 1001 ई. दुर्ग पर अधिकार किया।
- तैमूर आक्रमण के समय हिन्दू मुस्लिम महिलाओं ने जौहर किया।
- शेर खां की कब्र।
- बीकानेर महाराजा सूरतसिंह के शासन काल में 1805 ई. भटनेर पर अधिकार हो गया, मंगलवार का दिन होने के कारण इस दुर्ग का नाम हनुमानगढ़ रखा।

भैसरोड़गढ़

- चितौड़गढ चम्बल व बामनी नदियों के संगम स्थल के समीप।
- जल दुर्ग (तीन ओर से पानी से घिरा)
- निर्माण-भैसाशाह (व्यापारी) व रोड़ा चारण (बनजारा) (जेम्स टॉड के अनुसार)
- 'राजस्थान का वेल्लोर'। अरावली पर्वतमाला हों।

सिवाना का किला

- बाड़मेर।
- निर्माण-वीर नारायण पंवार (दसवीं शताब्दी) राजा, भोज का पुत्र।
- इसे अणखलौ तथा कुमटगढ़ दुर्ग भी कहते है।
- 1538ई. राव मालदेव का अधिकार, परकोठे का निर्माण करवाया।
- गिरि सुमेल के बाद शेरशाह द्वारा पीछा किये जाने के समय राव मालदेव ने इस दुर्ग में शरण ली।
- राव चन्द्रसेन की संकटकालीन राजधानी। वीर कल्ला रायमलोत की वीरता हेतु प्रसिद्ध।
- प्रथम साका:- 1308-09 ई. चौहान शासक वीर सातलदेव के समय अलाउददीन खिलजी का आक्रमण, भांडेलाव तालाब को गौमांस से दूषित किया।
- वीर सातल ओर सोम शहीद, महिलाओं ने जौहर किया।

- अलाउददीन खिलजी, ने दुर्ग का नाम खैराबाद रखा व कमालउदीन गुर्ग को दुर्ग रक्षक नियुक्त।
- द्वितीय साका:- 1587, अकबर ने मोटा राजा उदयसिंह के नेतृत्व में आक्रमण, शासक वीर कल्ला रायमलोत (कल्याण मल), राजपूत वीर शहीद, महिलाओं ने हाडी रानी के नेतृत्व में जौहर।

अचलगढ़

- माउण्ड आबू (सिरोही)।
- निर्माण-परमार शासकों द्वारा।
- 1425 ई. महाराणा कुंभा ने इस प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेषों पर एक नये दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1311ई. राव लूबा ने देवड़ा चौहान शाखा स्थापित की।
- इसमें-मन्दाकिनी कुण्ड, मानसिंह की छतरी (सिरोही महाराव), पार्श्वनाथ जैन मंदिर, ओखी रानी महल (महाराणा कुंभा की पत्नी), सावन-भादो झील है।

जयगढ़ दुर्ग

- संकट मोचक दुर्ग।
- कुछ इतिहासकारों के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण मानसिंह-I ने शुरू करवाया व मिर्जा राजा जयसिंह ने पूर्ण किया। 1726ई. सवाई जयसिंह ने वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।
- उपनाम-चिल्ह का टोला (टीला)
- स्वतंत्रता प्राप्ति तक सिवाय स्वयं महाराजा तथा उनके द्वारा नियुक्त दो किलेदारों के जो महाराज के परम विश्वस्त सामन्तों में से हुआ करते थे, किसी को भी प्रवेश की अनुमति नहीं थी।
- यहाँ कच्छवाह राजाओं का दफीना (राजकोष) रखा जाता था।
- यह दुर्ग राजनैतिक बंदियों के लिए कारागृह के रूप में। जिस व्यक्ति को एक बार इस दुर्ग में डाला जाता था वह वापिस जिन्दा नहीं निकल पाता।
- श्रीमती इंदिरा गांधी ने आपातकाल में इसकी खुदाई करवाई। राज्य का एकमात्र दुर्ग है जहॉ तोप ढालने का संयंत्र लगा हुआ था। 'जय बाण' नामक तोप इसी संयंत्र से ढली हुई।
- इसमें एक लघु दुर्ग, जिसमें सवाई जयसिंह ने अपनी प्रतिद्वन्दी छोटे भाई विजयसिंह को कैद रखा जिसे विजयगढ़ी कहते है।
- राजाओं के मनोरंजन के लिए 'कठपुतली घर' भी किले में बना हुआ।

नागौर दुर्ग

- धान्वन दुर्ग की श्रेणी में।
- नागदुर्ग, नागपुर, नागाणा और अहिच्छत्रपुर इत्यादि नाम।
- निर्माण- चौहान राजा सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने।
- यह मुस्लिम मिशनरियों की प्रारम्भिक गतिविधयों और व्यापारिक काफिलों का भी आगमन स्थल रहा।
- अकबर अपने शासन काल के 15 वें वर्ष अर्थात् 1570ई. अजमेर में ख्वाजा साहब की जियारत करने के बाद नागौर आया तथा नागौर दरबार, लगाया, एक शुक्र तालाब खुदवाया।

मांडलगढ़

- भीलवाड़ा ।
- बनास, बेडच और मेनाल के संगम पर (अरावली पर्वतमाला में स्थित)
- कटोरनुमा अथवा मंडलाकृति।
- बीजासण को पहाड़ पर स्थित।
- वीर विनोद के अनुसार दुर्ग का निर्माण मंडिया भील व चनणा गूजर ने किया।
- ओझाजी के अनुसार निर्माण अजमेर के चौहान शासकों ने।
- कर्नल टॉड के अनुसार बालनोत सोलंकी (सरदार) द्वारा मांडलगढ का जीर्णोद्वार।

शेरगढ़

- धौलपुर, चम्बल नदी के किनारे।
- निर्माण कुषाण वंश के शासन काल में मालदेव द्वारा। डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार निर्माण जोधपुर राजा मालदेव द्वारा।
- 1540 ई. शेरशाह ने पुन: बनवाया व नाम शेरगढ़ रखा।
- धौलपुर के प्रथम राजा कीरतसिंह की राजधानी में रहा।
- हुनहुंकार तोप:- निर्माण महाराजा कीरतसिंह ने करवाया कारीगर श्री सीताराम

शेरगढ़ (कोशवर्द्धन)

- बाराँ (अटरू)। परवन नदी के किनारे। शेरशाह ने इस का नाम कोशवर्द्धन दुर्ग रखा।
- विभिन्न शासकों द्वारा सैनिक छावनी के रूप में उपयोग।
- जालिमसिंह झाला ने इस का जीर्णोद्वार करवाया व झालाओं की हवेली' नामक महल बनवाये।
- इसमें-सोमनाथ महादेव मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, चार भुजा मंदिर, झालाओं की हवेली, अमीर खॉ के महल,

शाहबाद दुर्ग

- बाराँ- चारों गहरे प्राकृतिक झरने तथा तीसरी ओर एक तालाब से घिरा।
- निर्माण 9वीं शताब्दी ई. परमार शासकों द्वारा। दूसरी मान्यता के अनुसार निर्माण चौहान राजा मुकटमणि ने द्वारा
- जामा मस्जिद का निर्माण करवाया।
- नवलबाण तोप।

दौसा का किला

- देवगिरि पहाड़ी पर।
- ढुंढाड के कच्छवाह वंश की प्रथम राजधानी।
- 1562ई. भारमल के भाई रूपसी की जागीर में। निर्माण संभवत: गुर्जर प्रतिहारों (बड़गुजरों ने)।
- महासिंह की मृत्यु होने पर उसकी विधवा सिसोदिया रानी दमयंती ने अपने पुत्र मिर्जा राजा जयसिह का पालन पोषण किया।
- सूप की आकृति (छाजले)।
- राजाजी का कुंआ।
- 14 राजाओं की साल।

अलवर दुर्ग (बाला किला), अलघुराय दुर्ग

- निर्माण :- विक्रमी संवत 1106 में आमेर नरेश कोकिलदेव के कनिष्ठ पुत्र अलघुराय ने इस पर्वत शिखर पर एक छोटा दुर्ग बनाकर उसके नीचे एक नगर बसाया जिसका नाम अलपुर रखा गया।
- राजा सूरजमल जाट ने सूरज कुण्ड बनाया। 1775 ई. कच्छवाहों की नरूका शाखा के प्रतापसिंह का अधिकार।
- सीताराम मंदिर का (निर्माण 1832 ई. प्रतापसिंह द्वारा)

बयाना दुर्ग (विजय मंदिर गढ़)

- निर्माण-विजयपाल (1040 ई. के लगभग)। मानी पहाड़ी पर।
- बयाना का प्राचीन नाम 'भादानक' (श्रीपंथ राजधानी)।
- विजयपाल ने 'महाराजधिराज परम भट्टारक' की उपाधि।
- डच यात्री फ्रेंकोइस पैल्सर्ट ने नील खेती व व्यापार का वर्णन किया।
- दुर्ग के भीतर लाल पत्थरों से बनी एक ऊँची लाट या स्तम्भ है जो भीमलाट के नाम से प्रसिद्ध (26 फीट चौड़ी), विष्णु

वर्द्धन ने विक्रमी संवत् 428 में पुण्डरीक यज्ञ की समाप्ति पर इसे वहाँ स्थापित किया।
- विक्रम संवत् 1012 में रानी चित्रलेखा द्वारा निर्मित ऊषा मंदिर बनवाया।

तिमनगढ़ (त्रिभुवन गढ़)

- करौली।
- यह दुर्ग राजस्थान का खजुराहों माना जाता है।
- महाराज विजयपाल के पुत्र त्रिभुवनपाल ने 11वीं शताब्दी ईस्वी में उस दुर्ग का निर्माण करवाया।
- मुस्लिम आधिपत्य के बाद इसका नाम इस्लामाबाद।
- अर्जुनपाल ने कल्याण जी का मंदिर बनवाया।
- ननंद भौजाई का कूँआ।

कुचामन का किला

- नावां तहसील, नागौर।
- जागीरी किलों में सिरमौर दुर्ग।
- "ऐसा किला राणी जाये के पास भले ही हो, ठुकराणी जाये के पास नहीं।"
- विक्रम संवत्1715 ई. रघुनाथ सिंह मेड़तिया ने इस दुर्ग पर अधिकार, तत्पश्चात यह भू-भाग जोधपुर रियासत के अधीन।
- कुचामन के ठाकुर केसरी सिंह को तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा' राव बहादुर का खिताब।

माधोराजपुरा का किला

- दौसा।
- सवाई माधोसिंह-I ने मराठों पर विजय के उपरान्त माधोराज पुरा का कस्बा अपने नाम पर बसाया। कच्छवाहों की नरूका शाखा का अधिकार।
- भरतसिंह नरूका ने अमीर खाँ पिण्डारी की बेगमों को बन्धक बनाकर रखा।
- जयपुर की राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाली महिला, जयसिंह तृतीय की धाय रूपा बढ़ारण को उसके दरबारी षड्यन्त्रों और कुचक्रों की सजा देने हेतु इस किले में नजरबन्द।

चौमू का किला

- चौमूहागढ़- जयपुर।
- ठाकुर कर्णसिंह ने (1595-97 ई.) के लगभग बेणीदास एक संत के आर्शीवाद से नींव रखी।
- उपनाम- रघुनाथ, धाराधार गढ़।
- किले के शीर्ष भाग की बनावट कमल के फूल के समान।
- इसमें- कृष्ण निवास, शीश महल, रतन निवास, मोती महल, देवी निवास (जयपुर के एलबर्ट हॉल की भांति), सीताराम मंदिर।

खण्डार का किला

- सवाई माधोपुर।
- रणथम्भौर दुर्ग का सहायक दुर्ग।
- गिरिदुर्ग, वन दुर्ग की श्रेणी में।
- बनास और गालण्डी नदियों के किनारे।
- आकृति-त्रिभुजाकार।
- शारदा तोप।

सज्जनगढ़ का किला

- उदयपुर। बांसदरा पहाड़ी पर।

मंडरायल दुर्ग

- करौली।
- निर्माण बृंजबहादुर ने।
- ग्वालियर दुर्ग की कुँजी।

टौडगढ़

- अजमेर। कर्नल टॉड द्वारा निर्मित।
- उपनाम- बोराड़वाड़ा का नाम।

नीमराणा का किला

- अलवर।
- उपनाम-पंचमहल।
- निर्माण-1464 ई. में चौहान शासकों द्वारा।

फतेहपुर का किला

- सीकर।
- शेखावटी का सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग।
- कायम खानियों द्वारा निर्मित।
- 1453 ई. में फतह खाँ कायम खानी ने बनाया।
- पठानी शैली में निर्मित।
- तेलिन का प्रसिद्ध महल।

नवलगढ़ किला

- झुंझुनँ।
- ठाकुर नवलसिंह द्वारा निर्मित।
- भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध।

लक्ष्मणगढ़ का किला

- सीकर।
- बेड़ पहाड़ी पर।
- निर्माण-1805 ई. राव राजा लक्ष्मणसिंह।
- बुर्जों की दीवारों से बना होने के कारण देश भर में प्रसिद्ध

डुंडलोद का किला

- झुंझुनूँ।
- निर्माण-ठाकुर केसरी सिंह 1750 ई.।
- वर्तमान में हैरिटेज होटल के रूप में।

चुरू का किला

- चुरू।
- निर्माण-ठाकुर कुशलसिंह 1649 ई.।
- बीकानेर महाराजा सूरतसिंह 1814 ई. इस दुर्ग पर आक्रमण, यहाँ के ठाकुर शिवसिंह ने गोला बारूद्ध खत्म होने पर चाँदी के गोले दागे। (बीकानेर सेना ने अमरचंद सुराणा के नेतृत्व में आक्रमण किया)
- विश्व इतिहास में चाँदी के गोले दागने वाला एक मात्र।
- शिवसिंह ने इसमें गोपीनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

राजस्थान के महल

हवामहल

- जयपुर
- 1799 ई. महाराजा प्रताप सिंह द्वारा निर्मित।
- वास्तुकार लाल चंद उस्ता। पांच मंजिला। 953 खिड़कियां।
- आकृति कृष्ण के मुकुट के समान भारतीय-फारसी शैली प आधाारित।
- 1999 में द्वितीय शताब्दी वर्ष मनाया गया है।

चन्द्र महल (सिटी पैलेस)

- जयपुर
- सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित।
- जयपुर राज परिवार का निवास स्थान।
- शिल्पी विधाधर भट्टाचार्य।
- सात मंजिला।

जल महल

- जयुपर।
- मानसागर झील में।

- अश्वमेध यज्ञ में आमंत्रित ब्राह्मणों को भोजन इसी महल में करवाया।
- सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित।

सिसौदिया रानी महल
- जयपुर।
- सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित (1730 ई.)
- सर्वतोभद्र महल
- सिटी पैलेस परिसर में स्थित इसे दिवाने खास कहते। है। इसे सामान्य जन सरबता महल कहते थे।
- सवाई जय सिंह द्वारा निर्मित।

बादल महल
- जयपुर।
- निर्माण सवाई जयसिंह द्वारा।
- तीज और गणगौर के मेलों के अवसर पर जयपुर नरेश इसमें दरबार आयोजित करते हैं।

मुबारक महल
- जयपुर।
- निर्माण माधोसिंह ।। (1900-1908)।
- रियासत में आने वाले अतिथियों को ठहराने हेतु।
- मुगल, यूरोपीय, राजपूत शैली में।
- वर्तमान में इसमें वस्त्रालय संचालित किया जा रहा है।

आमेर महल
- जयपुर (आमेर)।
- निर्माण मानसिंह प्रथम द्वारा।
- हिन्दु व मुस्लिम शैली में।
- बिशप हैबर '' मैने क्रेमलीन में जो कुछ देखा है और अल ब्रहा के बारे में जो कुछ सुना है उससे भी बढ़कर ये महल है।''

शीश महल
- आमेर (जयपुर)।
- निर्माण प्रारम्भ मानसिंह प्रथम द्वारा। सवाई जयसिंह ने इसे पूर्ण करवाया।
- इसे महाकवि बिहारी ने दर्पण धाम'' कहा।

सामोद महल
- जयपुर।
- राजा बिहारी दास ने (1645-1652) बनवाया।
- भित्ति चित्रों में धार्मिक जीवन के अलावा साहित्यिक एवं सामाजिक जीवन की झाँकी।
- राजस्थान में यहाँ फिल्मों की सर्वाधिक शुटिंग।

प्रीतम निवास
- जयपुर।
- चन्द्र महल में (सिटी पैलेस)।

माधोनिवास
- जयपुर।
- निर्माण माधोसिंह प्रथम ने।

बादल महल
- जैसलमेर।
- निर्माण 1818ई. सिलावटों द्वारा।
- ताजिया टॉवर।
- सिलावटों ने इसे महारावल वैरिशाल सिंह को भेंट।
- पॉच मंजिला।

सर्वोत्तम विलास महल
- जैसलमेर
- महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित

राज विसाल महल
- जैसलमेर।

जवाहर विलास महल
- जैसलमेर।
- जैसलमेर रियासत का प्रथम होटल।
- ईसाल बंगले के नाम से प्रसिद्ध।

धौड़ का यशोदा देवी पट्ट
- भीलवाड़ा।
- यह शिवालय रूठी रानी का महल कहलाता।

राजमहल (गढ़ पैलेस)
- बूँदी।
- बूँदी राजपरिवार का निवास स्थान।
- 17 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में निर्मित।
- कर्नल टॉड़ ''समस्त रजवाड़ों में सर्वश्रेष्ठ''।
- रूपयार्ड किपलिंग '' मानव द्वारा नहीं फरिश्तों द्वारा निर्मित''।
- इसमें हजारी दरवाजा, हाथी पोल, रतन निवास, नौबाण, रतन दौलत, रतन, महल, रतन मण्डप।
- इसका निर्माण 1773 ई. में विष्णु सिंह ने।

रंग-विलास महल
- निर्माण उम्मेदसिंह द्वारा चित्रशाला के रूप में करवाया गया।
- भित्ति चित्रण हेतु प्रसिद्ध।

अनिरूद्ध महल
- बूँदी।
- निर्माण 1676 ई. में करवाया गया बाद में इसे 'जनाना महल' बना दिया।

एक थम्बिया महल
- डूंगरपुर।
- गैब सागर के तट पर।
- वाराड़ की उत्कृष्टता वास्तुकला का नमूना।
- निर्माण शिवसिंह (1730-85) द्वारा अपनी राजमहिषी ज्ञानकुंवर की स्मृति में शिव ज्ञानेश्वर शिवालय के रूप मे

उदय विलास महल
- डुंगरपुर।
- गैबसागर।
- महारावल उदयसिंह द्वारा निर्मित।
- राजपरिवार का निवास स्थान।

बादल महल
- डुंगरपुर।
- गैबसागर तट पर।
- महारावल वीरसिंह ने इसका निर्माण करवाया।

उम्मेद भवन
- जोधपुर।
- महाराजा द्वारा निर्मित अकाल राहत कार्यो के तहत (1928-40)।
- घड़ियों का संग्रहालय।

छीतर पैलेस
- इसमें 347 कमरें। वास्तुविद हेनरी लैकेस्टर।
- इटेलिक तथा गैधिक शैली में।
- एशिया का नवीनतम राजप्रसाद।

अजीत भवन
- जोधपुर।
- देश का पहला हैरिटेज होटल।

बीजोलाइ के महल
- जोधपुर।
- कायलाना झील की पहाड़ियों के बीच।
- महाराजा तखतसिंह द्वारा निर्मित।

विजय मंदिर पैलेस
- अलवर।
- महाराजा जयसिंह द्वारा 1918 में निर्मित।
- इसमें सीताराम का मंदिर बना।

सिलीसेठ महल
- अलवर।
- महाराजा विनयसिंह ने रानी शीला के लिए बनवाया।

सरिस्का पैलेस (महल)
- अलवर।
- निर्माण जयसिंह ने 1902 ई. में 'डंयुक ऑफ एडिनबर्ग' की यात्रा में ठहरने हेतु करवाया।

हवा बंगला
- अलवर।
- इसका निर्माण बख्तार सिंह व विनय सिंह के शासन काल मं तिजारा की पहाड़ी पर करवाया गया।

लालगढ़ महल
- बीकानेर।
- निर्माण गंगा सिंह ने अपने पिता लालसिंह की स्मृति में।
- लाल पत्थर से निर्मित।
- इसमें अनूप 'संस्कृति लाइब्ररी' व सार्दुल संग्रहालय'।

गजनेर महल
- बीकानेर।
- निर्माण महाराजा गजसिंह ने निर्माण अकाल राहत कार्यो के तहत।

जग मंदिर
- कोटा।
- किशोर सागर तालाब के बीच। महाराव दुर्जन शाल की हाड़ी रानी बृजकंवर ने 1739 ई. में निर्मित।
- उदयपुर के लेक पैलेस की तर्ज पर

अभेड़ा महल
- कोटा।
- चम्बल नदी के किनारे।

गुलाब महल
- कोटा।
- राव जैलसिंह हाड़ा द्वारा निर्मित।

अबली मीणी का महल
- कोटा।
- महाराव मुकुन्दसिंह द्वारा अपनी पासवान हेतु (1684-1685)।
- मुकुन्दर हिल्स के शिखर पर। दर्रा वन्य जीव अभ्यारण्य में।

राज महल (सिटी पैलेस)
- उदयपुर।
- पिछोला झील के किनारे।
- निर्माण महाराणा उदयसिंह ने।
- फर्ग्युसन ने इसे 'विण्ड्सर महलों की संज्ञा दी''।
- इसमें कृष्ण विलास महल, राज आंगन, मोती महल, मानक महल, दिल खुश महल।

जगमंदिर
- उदयपुर।
- पिछोला झील में।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम द्वारा 1651 में निर्मित।
- महाराणा कर्णसिंह ने निर्माण कार्य प्रारम्भ किया।
- शाहजहाँ इसी महल में ठहरे।

जग निवास महल
- उदयपुर।
- पिछोला झील में।
- महाराणा जगतसिंह II द्वारा 1746 मे निर्मित।

सज्जन गढ़ पैलेस
- उदयपुर महल एवं उद्यान का निर्माण महाराणा सज्जन सिंह द्वारा।
- गुलाब बाँसदरा पहाड़ी पर।
- इसे वाणी विलास महल कहते है।
- इसमें दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना। (सन् 1874 ई.) की।

राजकुमार के महल
- उदयपुर

मोती महल
- उदयपुर

एक थम्भा महल
- मंडोर (जोधपुर)।
- महाराजा अजीत सिंह के शासन काल में।
- लाल व बलुआ पत्थर निर्मित तीन मंजिला।
- प्रहरी मीनार के नाम से प्रसिद्ध।

बुलानी महल
- जोधपुर।
- यह वर्तमान में उम्मेद अस्पताल है।

मोती महल
- जोधपुर।
- महाराजा सुरसिंह द्वारा निर्मित।

फुल महल
- जोधपुर।
- महाराजा अभयसिंह द्वारा निर्मित।

खेतड़ी महल
- झुंझुनू (1735-71)
- खेतड़ी महाराजा भोपाल सिंह द्वारा अपने ग्रीष्म कालीन विश्राम हेतु झुंझुनू शहर में।
- खिड़िकियों व झरोखों हेतु प्रसिद्ध इसमें लखनऊ जैसी भुल भुलैया तथा जयपुर के हवामहल की झलक।
- शेखावटी का हवामहल।

हरसुख विलास
- करौली।
- महाराजा हरवक्ष पाल द्वारा निर्मित इसमें सफेद चंदन से महकता उधान।

हवा महल
- कोटा।
- महाराव रामसिंह II द्वारा निर्मित

केशर विलास
- सिरोही।
- निर्माण 20 वीं शताब्दी महाराव केसरी सिंह द्वारा।
- वर्तमान सिरोही का राज परिवार इसमें रहता।

स्वरूप निवास
- सिरोही

सुनहरी कोठी
- टोंक।
- निर्माण 1824 ई. नवाब व जीउद्दौला ने।
- रत्न, कांच तथा मीनाकारी हेतु प्रसिद्ध।

मुबारक महल
- टोंक।
- इस्लामिक शैली में निर्मित।
- सम्पूर्ण भारत में यहां बकरा ईद के समय ऊँट की बलि।

फूल महल
- बाँसवाड़ा।
- महारावल जगमाल द्वारा निर्मित।

सावन भादो महल
- बाँरा।

सावन भादो झील
- सिरोही

सावन भादो कड़ाई
- देशनोक

राजस्थान की प्रसिद्ध हवेलियाँ

नथमल की हवेली - जैसलमेर।

सालिम सिंह की हवेली
- जैसलमेर की सबसे ऊँची इमारत।
- जैसलमेर के प्रधानमंत्री सालिमसिंह द्वारा (1841-1881) में निर्मित।
- यह हवेली अपनी पत्थर की नक्काशी व महीन जालियों के लिए प्रसिद्ध।
- ऊपरी मंजिल को मोती महल एवं जहाज महल कहते है।

पटवों की हवेली
- जैसलमेर, हिन्दू, मुगल एवं यहूदी स्थापत्य कला का संगम।

बागौर की हवेली
- उदयपुर मे इसका निर्माण मेवाड़ के प्रधानमंत्री श्री अमरचंद बड़वा द्वारा 1751-1778 के बीच कराया गया।
- वर्तमान मे पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का अधिकार।
- इसमें 138 कमरे है।

बच्छावतों की हवेली
- बीकानेर।
- निर्माण -1593 ई. कर्णसिंह बच्छावत द्वारा।
- मुगल, किशनगढ़, यूरोपीय चित्र शैली का प्रयोग किया गया।

रामपुरिया हवेली
- बीकानेर।
- हिन्दू, मूगल एंव यूरोपीय कला का समन्वय।
- इसके निर्माण का उद्देश्य लोगों को रोजगार व शिल्पकारों को संरक्षण प्रदान करना।

राखी हवेली-जोधपुर।

पौद्दार की हवेली-नवलगढ़ (झुंझुनूं)।

भक्तों की हवेली
- झुंझुनूं।
- सौ से अधिक खिड़कियां।

नाथूराम पौद्दार की हवेली -बिसाऊ (झुंझुनूं)।

सोने-चांदी की हवेली :-महनसर (झुंझुनूं)।

सुराणा हवेली
- चुरू।
- 1100 दरवाजें एवं खिड़कियां, 6 मंजिला ।
- चुरू का हवामहल।

रामविलास गोयनका की हवेली-चुरू।

झाला की हवेली-कोटा।

बड़े देवता की हवेली-कोटा।

केसरीसिंह बारहठ की हवेली-शाहपुरा (भीलवाड़ा)।

भामाशाह हवेली-चित्तौड़।

मालमजी का कमरा- चुरू।

स्मारक/समाधियाँ/छत्तरियाँ

मरणोपरान्त स्मृति चिन्ह बनाने की परम्परा प्राचीन रही है। देश पर प्राण न्यौछावर करने वालों की स्मृतियों में उनकी समाधियाँ एवं सती एवं जौहर करने वाली स्त्रियों की उस स्थान पर छतरियाँ बनी जिन्हें **देवलियाँ** या **देवल** कहा जाता था।

स्थापत्य कला की दृष्टि से इन स्मारकों का बहुत महत्व है। राजाओं की छतरियों मे जहाँ अधिकतर पगले (पैर) बने है। तो शैवों, नाथों की छतरियों में खडाऊ, शिवलिंग या नंदी प्रतीक रूप में बने है। इस दृष्टि से जोधपुर के महामन्दिर की छतरी विशेष उल्लेखनीय है। गैटोर (जयपुर), जसवंत थड़ा (जोधपुर), छत्रविलास बाग (कोटा), बड़ा बाग (जैसलमेर) इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। अनेक स्तम्भों पर टिके गोल गुम्बद, राजपूती मेहराबदार छतरियाँ, मूर्तिकला और बेलबूटों से सुसज्जित स्थापत्य देखते ही बनता है।

राजस्थान के प्रमुख स्मारक-

मूसीरानी की छतरी
- अलवर।
- महारानी मूसी तथा बख्तावरसिंह की स्मृति में निर्माण किया गया।
- 1815 ई. महाराजा विनयसिंह द्वारा निर्मित
- राजपूत हिन्दू स्थापत्य कला की अनुपम धरोहर।
- 80 खंभों की छतरी

84 खंभों की छतरी
- बूंदी
- निर्माण राव राजा अनिरूद्ध सिंह के द्वारा धाभाई देवा की स्मृति में (देवा राव राजा अनिरूद्ध सिंह का धाभाई था)
- तीन मंजिला।
- 1683 ई. में निर्माण।

केशर बाग की छतरियाँ
- बूंदी।
- बूंदी नरेशों तथा राजपरिवार के सदस्यों की 66 छतरियां

देवी कुण्ड की छतरियाँ
- बीकानेर।
- बीकानेर राजाओं की छतरियां।
- यहां राव कल्याणमल से महाराजा डुंगरसिंह तथा राजाओं रानियों तथा राजकुमारों की छतरियां बनी।

मूरली छतरी
- बारां (मांगरोल)
- इस छतरी से ज्ञात होता है कि कोटा के महाराव किशोरसिंह द्वितीय से जुझते हुए 1 अक्टूबर 1821 को अग्रेंजी सेना के सेनानायक कर्नल क्लार्क व रीड शहीद।
- इस छतरी को राष्ट्रीय स्मारक होने का गौरव प्राप्त।

जगन्नाथ कच्छवाह की छतरी
- माण्डल (भीलवाड़ा)।
- 32 खम्भों की छतरी का निर्माण बादशाह जहांगीर द्वारा।

बनजारों की छतरी
- लालसोट (दौसा)

ईश्वरी सिंह की छतरी
- जयपुर (सिटी पैलेस में)
- निर्माण-माधोसिंह द्वितीय ने।

गेटोर की छतरियां
- जयपुर।
- महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय से लेकर मानसिंह द्वितीय तक के राजाओं व उनके पुत्रों की स्मृति में।

- पंचायतन शैली में।
- सबसे भव्य छतरी सवाई जयसिंह द्वितीय की।
- सबसे बाद की छतरी मानसिंह द्वितीय की।

पंचकुण्डा की छतरियां
- जोधपुर।
- जोधपुर के रानियों की छतरियां।
- ये छतरियां स्थापत्य एवं शिल्प कला के लिए प्रसिद्ध यहां कुल 42 छतरियां।
- इसमें सबसे भव्य 32 स्तम्भों वाली रानी सूर्यकंवरी की छतरी (महाराजा मानसिंह की पत्नी) सूर्यकंवरी जयपुर नरेश प्रतापसिंह की पुत्री, मृत्यु 1825 ई।

कागा की छतरियां
- जोधपुर।
- कागा नाम से अत्यन्त प्राचीन तीर्थ स्थल।
- ऋषि श्रेष्ठ 'कांग भुशुण्डि' ने यहां तपस्या की।
- जोधपुर राजपरिवार के सदस्यों का अंतिम संस्कार यहां।

गोरा धाय की छतरी
- जोधपुर।
- जोधपुर नरेश अजीतसिंह की धाय मां।
- पति मनोहर गोपी गहलोत की 18 मई, 1704 को मृत्यु गोरा धााय सती।
- छः खम्भों की छतरी।

क्षार बाग की छतरियां
- कोटा।
- कोटा राज्य के शासकों का दाह संस्कार।

गोपालसिंह की छतरी
- करौली।
- 1757 ई. में महाराजा गोपालसिंह द्वारा जब मथुरा में मुसलमानों द्वारा देव मूर्तियां खण्डित किये जाने का समाचार सूना तो वहां पहुंचे तथा लड़ते हुए शहीद।

अमरसिंह राठौड़ की छतरी
- नागौर।
- 16 खम्भों की छतरी।

आहड़ की छतरियां
- गंगो गांव (आहड़, उदयपुर)
- प्रथम छतरी महाराणा अमरसिंह।
- अमरसिंह के बाद समस्त महाराणाओं की छतरियां यहां बनी।
- **'महासतियों का टीला'** के उपनाम से विख्यात।

बड़ा बाग की छतरियां
- जैसलमेर।

आँतेड़ की छतरियां
- अजमेर।
- निर्माण- विक्रम संवत् 1489 ई.।
- हौलेण्ड की चित्रकार मैरियम बर्गर ने इन छतरियों के भित्ति चित्रण का उल्लेख किया।

सूरज छतरी
- बूंदी।
- निर्माण-छत्रसाल की रानी श्याम कुमारी (सुरज कंवर) द्वारा।

बदनौर की छतरी
- भीलवाड़ा।
- यह रावजोधा की छतरी (राव जोध सिंह)

जयसिंह की छतरी
- रणथम्भौर (सवाई माधोपुर)
- निर्माण हम्मीद देव चौहान ने अपने पिता जयसिंह (जैत्रसिंह) के 32 वर्षो के शासन काल की स्मृति में।
- 2 खम्भों की छतरी भी कहते है।
- इसे न्याय छतरी भी कहते है।

अमरगढ़ की छतरिया
- भीलवाड़ा।

जसवंत थड़ा की छतरी
- जोधपुर।
- महाराजा जसंवत सिंह द्वितीय की छतरी।
- निर्माण-महाराजा सरदारसिंह द्वारा 1906 ई. सफेद संगमरमर से।
- राजस्थान का ताजमहल।

सिंधिया अप्पाजी की छतरी
- नागौर।

झाला मन्ना की छतरी
- हल्दीघाटी (राजसंमद)।

दीपकुंवरी की छतरी
- बीकानेर।
- पत्नी श्री मोतीसिंह पुत्री श्री महाराजा सूरतसिंह।
- बीकानेर रियासत में अन्तिम सती होने वाली रानी।

राव गांगा की छतरी
- पंचकुण्डा (जोधपुर)
- पंचकुण्डा की सबसे प्राचीन छतरी।

चेतक की छतरी
- हल्दी घाटी (राजसंमद)

कुत्ते की छतरी (कूकूराज की घाटी)
- सवाई माधोपुर।

अकबर की छतरी
- बयाना (भरतपुर)।

पीर कपूर बाबा फकीर की छतरी
- शाहजहां ने जगमंदिर में बनाई।

गंगा बाई की छतरी
- भीलवाड़ा।

जोगीदास की छतरी-उदयपुरवाटी (झुंझुनूं)।

1. **दुर्गादास की छतरी** - शिप्रा नदी के किनारे उज्जैन स्थित।
2. **मामा भानजे की छतरी।**- जोधपुर स्थित धन्ना भीया की छतरी।
3. **रैदास की छतरी** - चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित संत रैदास की छतरी।
4. **संत पीपा की छतरी** - गागरोन दुर्ग के पास संत पीपा (प्रतापराव) की छतरी।
5. **गड़रा शहीद स्मारक** - 1945 के भारत-पाक युद्ध मे रेलवे कर्मचारियों की बाड़मेर स्थित स्मारक।